

विवाह संस्कार और गृहप्रवेश में मुहूर्त चयन के ज्योतिषीय नियम एवं उनके निहितार्थ

(एक PRISMA-ScR-निर्देशित विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन)

*Parhlad Singh Ahluwalia, Dr. Bhim Rao Ambedkar Law University, Jaipur,
Rajasthan*

सारांश

भारतीय समाज में विवाह और गृहप्रवेश केवल पारिवारिक आयोजन नहीं हैं, ये सामाजिक मान्यता, आर्थिक व्यय और धार्मिक आस्था के संगम-बिंदु हैं। इन दोनों अवसरों की तिथि और समय का निर्धारण प्रायः मुहूर्तशास्त्र के नियमों से होता है। यह अध्ययन तीन प्रश्नों का उत्तर खोजता है। पहला, शास्त्रीय स्रोतों में विवाह और गृहप्रवेश के मुहूर्त-नियम क्या हैं और उनमें कितनी आंतरिक एकरूपता या विविधता है। दूसरा, ज्योतिष और संबद्ध विश्वासों की प्रभावकारिता के विषय में उपलब्ध अनुभवजन्य शोध क्या बताता है। तीसरा, इन नियमों के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, विधिक और आर्थिक निहितार्थ क्या हैं।

पद्धति के रूप में PRISMA 2020 और PRISMA-ScR के पारदर्शिता-सिद्धांतों का अनुकूलित उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत 117 प्रविष्टियों के लेखक-संकलित संदर्भ-समुच्चय की क्रमिक छँटाई की गई और उसमें 32 स्वतंत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत जोड़े गए। कुल 37 स्रोतों का विश्लेषण हुआ।

निष्कर्ष चार हैं। पहला, मुहूर्त-नियम एक बहुस्तरीय परंतु ग्रंथ-भेद, क्षेत्र-भेद और पंचांग-भेद से अनेक स्थानों पर परस्पर भिन्न व्यवस्था हैं। दूसरा, ज्योतिषीय पूर्वकथन की सटीकता के परीक्षणों में सामान्यतः संयोग-स्तर से अधिक प्रमाण नहीं मिला है, और मुहूर्त-विशिष्ट प्रत्यक्ष परीक्षण-साहित्य अत्यल्प है। तीसरा, अनुष्ठान-मनोविज्ञान के शोध बताते हैं कि अनुष्ठानों का वास्तविक लाभ चिंता-शमन, सामाजिक समन्वय और अर्थ-निर्माण में निहित हो सकता है, इसके लिए किसी खगोलीय-कारणत्व की आवश्यकता नहीं। चौथा, भारतीय विधि में विवाह की वैधता मुहूर्त पर निर्भर नहीं है।

यह पत्र परंपरा के खंडन का नहीं, परंपरा के विवेकपूर्ण और प्रमाण-सजग पुनर्पाठ का प्रस्ताव है।

कूटशब्द: मुहूर्त, विवाह संस्कार, गृहप्रवेश, ज्योतिषशास्त्र, अनुष्ठान-मनोविज्ञान, पंचांग, PRISMA-ScR, मुहूर्तचिंतामणि

1. भूमिका

हिन्दू परंपरा में जीवन-चक्र के प्रमुख पड़ावों को संस्कार कहा गया है। संस्कार की संकल्पना का आशय व्यक्ति को सांस्कृतिक रूप से परिष्कृत करना और उसे सामाजिक-धार्मिक समुदाय में स्थापित करना है [1]। हिन्दी समाजशास्त्रीय साहित्य में संस्कार को संस्कृति के संचरण-तंत्र के रूप में देखा गया है, जहाँ भाषा, रीति और मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं [2-4]। इस दृष्टि से विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, दो कुलों, सामाजिक संबंध-जालों और आर्थिक दायित्वों का पुनर्गठन भी है। गृहप्रवेश वह संस्कार है जिसके माध्यम से कोई परिवार नए आवास को आश्रय के साथ-साथ सामाजिक पहचान के केंद्र के रूप में स्वीकार करता है।

इन दोनों संस्कारों की एक सर्वव्यापी विशेषता है: वे किस दिन और किस क्षण संपन्न हों, इसका निर्णय प्रायः ज्योतिषीय गणना से होता है। धर्मशास्त्र के इतिहास में संस्कारों के काल-निर्धारण पर विस्तृत विचार मिलता है [5]। ज्योतिष-साहित्य की ऐतिहासिक रूपरेखा बताती है कि फलित-ज्योतिष और मुहूर्त-विद्या का विकास खगोलीय गणना और शुभाशुभ-विचार के सम्मिश्रण से हुआ [6]। समकालीन लोक-हिन्दू धर्म में भी पंचांग और ज्योतिषी की भूमिका अनेक निर्णयों में बनी हुई है [7]। इसका सीधा परिणाम यह है कि वैवाहिक सत्र (विवाह-ऋतु) में अच्छे मुहूर्तों की माँग बढ़ने से सभागृह, पुरोहित, कैटरिंग और यात्रा-सेवाओं पर दबाव बढ़ता है। यह एक अनुमानित सामाजिक-आर्थिक प्रभाव है, जिसे अनुभवजन्य रूप से परखे जाने की आवश्यकता है।

यहीं से एक वैज्ञानिक-विश्लेषणात्मक प्रश्न उठता है। किसी परंपरा का सांस्कृतिक महत्व एक बात है और उसके द्वारा किए जाने वाले कारणात्मक दावे दूसरी। यदि कोई मुहूर्त यह दावा करता है कि अमुक नक्षत्र या लग्न में किया गया विवाह अधिक सुखी होगा, तो यह एक परीक्षणार्थ परिकल्पना है, और इसे परीक्षण की पद्धति से परखा जा सकता है। इस विषय पर ज्योतिष के सामान्य दावों के नियंत्रित परीक्षण उपलब्ध हैं। इनमें सबसे चर्चित दोहरा-अंध (double-blind) परीक्षण कार्लसन का है, जिसमें ज्योतिषी जन्म-कुंडली और व्यक्तित्व का मिलान संयोग-स्तर से बेहतर नहीं कर सके [8]।

इस अध्ययन की स्थिति इन दोनों ध्रुवों के बीच है। यह न तो मुहूर्त को वैज्ञानिक सत्य घोषित करता है, न उसे केवल अंधविश्वास कहकर खारिज करता है। यह पूछता है कि शास्त्र स्वयं क्या कहता है, प्रमाण क्या कहते हैं, और समाज उससे वास्तव में क्या ग्रहण करता है।

शोध-अंतराल (research gap) तीन स्तरों पर है। पहला, हिन्दी में मुहूर्त-नियमों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रायः श्रद्धापरक या खंडनपरक रहा है, जबकि पद्धतिगत रूप से पारदर्शी समीक्षा दुर्लभ है। दूसरा, ज्योतिष-परीक्षण के साहित्य में मुहूर्त (चयन-ज्योतिष) पर अलग से अनुभवजन्य ध्यान बहुत कम गया है, अधिकांश अध्ययन जन्म-कुंडली और व्यक्तित्व या भविष्यवाणी पर केंद्रित हैं। तीसरा, विधिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक आयामों को एक साथ जोड़ने वाला अध्ययन अभाव में है। यह पत्र इन तीनों अंतरालों को संबोधित करता है।

2. शोध-प्रश्न, उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ

शोध-प्रश्न:

- विवाह और गृहप्रवेश के लिए प्रमुख शास्त्रीय मुहूर्त-नियम कौन-से हैं, और उनमें कितनी एकरूपता है?
- मुहूर्त के आधारभूत दावों के संबंध में उपलब्ध अनुभवजन्य साक्ष्य क्या संकेत देते हैं?
- मुहूर्त-व्यवहार के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, विधिक और आर्थिक निहितार्थ क्या हैं?

उद्देश्य: (क) नियमों का स्रोत-आधारित वर्गीकरण; (ख) पूर्व शोध-समीक्षाओं के परिणामों का संश्लेषण; (ग) बहु-दृष्टिकोण विश्लेषण; (घ) भावी शोध के लिए परीक्षणार्थ प्रस्ताव।

कार्यकारी परिकल्पनाएँ (ये लेखकीय परिकल्पनाएँ हैं, सिद्ध तथ्य नहीं):

- **H1:** मुहूर्त के नियम-समुच्चय में ग्रंथ, पंचांग और क्षेत्र के अनुसार महत्वपूर्ण भिन्नता है, जो नियमों की निरपेक्षता पर प्रश्न उठाती है।
- **H2:** मुहूर्त के कारणात्मक दावों (उदाहरण: अमुक काल में विवाह से दांपत्य-सुख) के पक्ष में स्वतंत्र अनुभवजन्य प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

- **H3:** मुहूर्त का वास्तविक, मापन-योग्य प्रभाव (यदि कोई है) अनुष्ठान-जनित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों के माध्यम से कार्य करता है।
- **H4:** अनेक नियमों के एक साथ लागू होने से स्वीकार्य तिथियों की संख्या अत्यंत कम हो जाती है, जिससे समय-संकुलन होता है।

3. शोध-विधि

3.1 अभिकल्प और रिपोर्टिंग-मानक

यह एक स्कोपिंग (मानचित्रण-परक) समीक्षा है, जो व्यवस्थित समीक्षाओं के लिए बने PRISMA 2020 कथन [9] और स्कोपिंग समीक्षाओं के लिए विस्तारित PRISMA-ScR [10] के पारदर्शिता-सिद्धांतों का अनुकूलित प्रयोग करती है। अनुकूलन का कारण यह है कि इस विषय के मूल स्रोत प्रायः संस्कृत ग्रंथ और अनुवाद हैं, जो किसी डेटाबेस में अनुक्रमित नहीं होते। इसलिए इस अध्ययन में कोई नया डेटाबेस-खोज नहीं चलाई गई, और स्रोत-चयन उद्देश्यपूर्ण (purposive) है, न कि संपूर्णतावादी (exhaustive)। यह सीमा आगे भी उल्लिखित है।

3.2 स्रोत-चयन के चरण

स्रोत-चयन दो चरणों में हुआ।

चरण-1 (लेखक-संकलित संदर्भ-समुच्चय की छँटाई): लेखक द्वारा उपलब्ध कराए गए 117 प्रविष्टियों के समुच्चय की जाँच की गई। इसमें दो मानदंड लागू हुए। पहला, तिथि-मानदंड: प्रकाशन-वर्ष 2024 या उससे पूर्वी। दूसरा, विषय-प्रासंगिकता: विषय से प्रत्यक्ष संबंध।

परिणाम इस प्रकार रहे। 117 में से 2 बिना तिथि की थीं, और 97 वर्ष 2025–2026 की थीं, इसलिए ये 99 बाहर हुईं। तिथि-पात्र प्रविष्टियाँ 18 बचीं। इनमें से 13 उच्च शिक्षा-गुणवत्ता, गांधी-चिंतन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, पर्यावरण और अस्पताल-सुरक्षा जैसे विषयों पर थीं, जो मुहूर्त या संस्कार से कोई तर्कसंगत संबंध नहीं रखतीं, अतः बाहर हुईं। शेष 5 सम्मिलित हुईं: संस्कार और संस्कृति पर 3 [2–4], शोध-नैतिकता पर 1 [12] और साहित्यिक-चोरी की पहचान पर 1 [11]।

चरण-2 (स्वतंत्र स्रोतों का उद्देश्यपूर्ण समावेश): प्राथमिक ग्रंथों (वेदांग ज्योतिष, गृह्यसूत्र, मनुस्मृति, बृहत्संहिता, मुहूर्तचिंतामणि), धर्मशास्त्र और ज्योतिष के इतिहास-ग्रंथों, पंचांग-सुधार की आधिकारिक रिपोर्ट, भारतीय विधि के स्रोतों और ज्योतिष-परीक्षण तथा अनुष्ठान-मनोविज्ञान के प्रकाशित शोध-पत्रों से 32 स्रोत जोड़े गए। कुल स्रोत 37 हुए। सभी का प्रकाशन-वर्ष 2024 से पूर्व है।

3.3 डेटा-निष्कर्षण एवं विश्लेषण

प्रत्येक स्रोत से तीन तत्त्व निकाले गए: (क) नियम या दावा, (ख) साक्ष्य का प्रकार (पाठ्य, अवलोकनात्मक, प्रायोगिक), (ग) निष्कर्ष। इसके बाद गुणात्मक विषयगत संश्लेषण किया गया और नियमों की तुलनात्मक सारणी (तालिका 1) बनाई गई। अनुभवजन्य शोधों के परिणाम तालिका 2 में संकलित हैं। इसके अतिरिक्त एक सरल संयोजन-मॉडल (खंड 10) बनाया गया, जिसकी सारी मान्यताएँ स्पष्ट घोषित हैं।

3.4 मौलिकता एवं शोध-नैतिकता

मौलिकता के लिए पाठ लेखक के अपने शब्दों में तैयार किया गया है। उद्धरण केवल संस्कृत मूल-वचनों के हैं और स्रोत-सहित हैं। साहित्यिक-चोरी के निवारण और पहचान की तकनीकों पर उपलब्ध विवेचन [11] के अनुरूप, प्रकाशन से पूर्व समानता-जाँच-उपकरण से परीक्षण की संस्तुति की जाती है। सामाजिक-विज्ञान शोध में अपेक्षित नैतिक सिद्धांतों, अर्थात् स्रोतों की ईमानदार प्रस्तुति, चयन-पक्षपात की स्वीकृति और निष्कर्षों की अतिशयोक्ति से बचाव [12], का पालन किया गया है। चूंकि इस अध्ययन में मानव-प्रतिभागी नहीं हैं, नैतिक-समिति की अनुमति अपेक्षित नहीं थी।

3.5 पद्धतिगत सीमाएँ

स्रोत-चयन उद्देश्यपूर्ण है, इसलिए प्रकाशन-पक्षपात की संभावना बनी रहती है। अंग्रेजी और संस्कृत स्रोतों पर निर्भरता है, क्षेत्रीय भाषाओं के स्थानीय मुहूर्त-ग्रंथों का समावेश सीमित है। गुणवत्ता-आकलन औपचारिक जोखिम-पक्षपात उपकरण से नहीं, बल्कि स्रोत-प्रकार और पद्धति की समीक्षा से किया गया। ये सीमाएँ निष्कर्षों को सामान्यीकरण-योग्य नहीं, बल्कि दिशासूचक बनाती हैं।

4. शास्त्रीय आधार: वेदांग से मुहूर्तचिंतामणि तक

4.1 ज्योतिष की शास्त्रीय स्थिति

मुहूर्त की जड़ें वेदांग ज्योतिष में खोजी जाती हैं, जहाँ ज्योतिष को वेदांगों में शीर्ष-स्थान दिया गया है। वहाँ का प्रसिद्ध श्लोक है:

*यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम् ॥ [13]*

अर्थात्, जैसे मोरों के लिए शिखा और नागों के लिए मणि है, वैसे ही वेदांग-शास्त्रों में ज्योतिष शीर्ष पर स्थित है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ ज्योतिष का मूल प्रयोजन यज्ञ-काल का निर्धारण है, अर्थात् तिथि, नक्षत्र और ऋतु की गणना। इस ग्रंथ की रचना-तिथि पर विद्वानों में मतभेद है और प्रस्तावित काल कई शताब्दियों में फैले हैं [13]। यह मतभेद स्वयं यह संकेत देता है कि "सनातन और अपरिवर्तनीय" माने जाने वाली परंपरा का ऐतिहासिक विकास अनेक स्तरों में हुआ।

बाद के साहित्य में ज्योतिष का तीन-स्कंधीय विभाजन मिलता है, जिसमें गणित (सिद्धांत), होरा और संहिता सम्मिलित हैं। वराहमिहिर की बृहत्संहिता इसी ओर संकेत करती है:

*ज्योतिःशास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम् ।
तत्कात्स्न्योपनयस्य नाम मुनिभिः संकीर्त्यते संहिता ॥ [14]*

इसका आशय है कि अनेक विषयों वाला ज्योतिःशास्त्र तीन स्कंधों पर टिका है और उसके समग्र निरूपण को मुनियों ने "संहिता" कहा है। बृहत्संहिता में वास्तु-विद्या, शुभाशुभ-लक्षण और काल-विचार के प्रकरण हैं, इसलिए यह गृहनिर्माण और प्रवेश के नियमों की पृष्ठभूमि समझने में उपयोगी है [14]।

4.2 गृह्यसूत्र: संस्कार-काल के आरंभिक सूत्र

संस्कारों के कर्मकांडीय विधान का प्राचीन स्रोत गृह्यसूत्र हैं। आश्वलायन गृह्यसूत्र का एक सूत्र विवाह-काल के संबंध में सामान्य दिशा देता है:

उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौलोपनयनगोदानविवाहाः ॥ [15]

अर्थ यह है कि उत्तरायण में, शुक्लपक्ष (बढ़ते चंद्र) में और शुभ नक्षत्र में चूड़ाकरण, उपनयन, गोदान और विवाह किए जाएँ। (पाठ-भेद संभव है, मानक संस्करण से मिलान आवश्यक।) इस सूत्र की विशेषता इसकी सादगी है: तीन ही मानक हैं, अर्थात् अयन, पक्ष और नक्षत्र, जबकि परवर्ती मुहूर्त-ग्रंथों में नियमों की संख्या कई गुना बढ़ जाती है [15]। यह प्रवृत्ति "नियम-स्फीति" (rule-inflation) का ऐतिहासिक सूचक है, जिस पर खंड 9 में विचार होगा।

4.3 स्मृति-साहित्य और पात्रता के नियम

मनुस्मृति के तीसरे अध्याय में विवाह-संबंधी पात्रता-नियम मिलते हैं। उदाहरणार्थ:

*गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि ।
उद्वहेत द्विजो भार्या सवर्णा लक्षणान्विताम् ॥ [16]*

और निकट संबंध के निषेध पर:

*असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः ।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने ॥ [16]*

इन वचनों में जो ध्यातव्य है वह यह कि उद्धृत अंशों में बल गुरु की अनुमति, शास्त्रविधि, लक्षण और सपिंड-निषेध पर है, नक्षत्र-गणित पर नहीं। यह वक्तव्य केवल उद्धृत अंशों के विषय में है और संपूर्ण स्मृति का सामान्यीकरण नहीं। (इन वचनों में सवर्ण-विवाह का आग्रह एक ऐतिहासिक सामाजिक-व्यवस्था का परिचायक है, जिसे समकालीन संवैधानिक मूल्यों की दृष्टि से अलग से परखा जाना चाहिए।) मनुस्मृति के समालोचनात्मक अनुवाद और टिप्पणी में इन वचनों का संदर्भ-सहित विवेचन उपलब्ध है [16]।

4.4 मध्यकालीन मुहूर्त-ग्रंथ

मुहूर्त का सुसंगठित निरूपण परवर्ती ग्रंथों में मिलता है। इनमें दैवज्ञ राम का मुहूर्तचिंतामणि (लगभग 1600 ई.) सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ है, जिसमें संस्कार, यात्रा, वास्तु और अन्य कर्मों के लिए मुहूर्त-प्रकरण हैं और जिस पर गोविंद की पीयूषधारा टीका लोकप्रिय है [17]। उत्तर भारत में प्रचलित अधिकांश विवाह और गृहप्रवेश-मुहूर्त इसी परंपरा की व्याख्याओं पर आधारित माने जाते हैं।

ज्योतिष के ऐतिहासिक अध्ययनों के अनुसार भारतीय फलित-ज्योतिष का निर्माण केवल देशज प्रक्रिया नहीं रहा, उसमें पश्चिमी एशिया और यूनानी परंपराओं के संपर्क की भी भूमिका बताई गई है [18]। मुहूर्त की धर्मशास्त्रीय-ऐतिहासिक स्थिति का विस्तृत लेखा-जोखा धर्मशास्त्र के इतिहास में उपलब्ध है [19]। कैलेंडर और काल-गणना के ऐतिहासिक अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय पंचांग-व्यवस्था में सौर और चांद्र गणना के अनेक संस्करण साथ-साथ चलते रहे हैं [20]।

इन सबका संयुक्त निहितार्थ यह है कि "मुहूर्त" कोई एकल, अपरिवर्तनीय संहिता नहीं, बल्कि सहस्राब्दी भर में परिवर्धित और संशोधित एक विकासशील परंपरा है। यह तथ्य परंपरा के विरुद्ध आरोप नहीं, बल्कि उसे समझने की पहली शर्त है।

5. विवाह-मुहूर्त के नियम

5.1 सामान्य नियम-संरचना

मध्यकालीन परंपरा में विवाह-मुहूर्त का निर्णय परतदार छँटाई जैसा है। पहले व्यापक कालखंड (अयन, मास, पक्ष) छँटे जाते हैं, फिर तिथि, वार और नक्षत्र का चयन होता है, फिर लग्न और घड़ी-स्तर का समय तय होता है, और अंत में वर्ज्य योगों का निवारण किया जाता है [17,19]। सामान्य पंचांग-आधारित व्यवहार में अधिक प्रचलित नियम निम्नलिखित हैं (ग्रंथ और क्षेत्र-भेद से कुछ अंतर संभव हैं)।

काल-खंड: उत्तरायण और शुक्लपक्ष को प्राथमिकता दी जाती है [15]। प्रचलित परंपरा में माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ और मार्गशीर्ष जैसे मास विशेषतः ग्राह्य माने जाते हैं, जबकि चातुर्मास (देवशयनी से प्रबोधिनी एकादशी तक) और अधिकमास सामान्यतः वर्ज्य हैं [17]।

गुरु-शुक्र का अस्त होना: बृहस्पति या शुक्र के सूर्य के निकट होकर अस्त हो जाने की अवधि में विवाह वर्ज्य माना जाता है। यह नियम अत्यंत व्यापक है, पर यह भी लोक-प्रचलन का उतना ही अंग है जितना ग्रंथ का।

तिथि: रिक्ता तिथियाँ (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी), अमावस्या और प्रायः अष्टमी वर्ज्य मानी जाती हैं [17]।

वार: सामान्यतः सोम, बुध, गुरु और शुक्र श्रेष्ठ माने जाते हैं; रविवार, मंगलवार और शनिवार के विषय में मत भिन्न-भिन्न हैं [17]।

नक्षत्र: रोहिणी, मृगशिरा, मघा, तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा), हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल और रेवती जैसे नक्षत्र प्रायः शुभ गिने जाते हैं [17]।

लग्न-शुद्धि: विवाह-लग्न में सप्तम स्थान की शुद्धि, चंद्रमा और शुक्र की स्थिति जैसे सूक्ष्म नियम हैं, जिन पर ग्रंथों में विस्तृत चर्चा मिलती है [17]।

विशेष प्रावधान: गोधूलि लग्न (संध्याकाल) को विभिन्न दोषों का निवारक माना गया है। इसी प्रकार लोक-परंपरा में "अबूझ मुहूर्त" की धारणा है, जैसे अक्षय तृतीया, जिनमें पंचांग-शुद्धि देखे बिना विवाह हो सकता है। यह अपवाद-प्रणाली इस बात का प्रमाण है कि स्वयं परंपरा ने कठोरता को लचीलेपन से संतुलित किया है।

5.2 कुंडली-मिलान और मुहूर्त का भेद

व्यवहार में तीन अलग प्रक्रियाएँ प्रायः मिला दी जाती हैं। पहली, वर-वधू की कुंडली का मिलान (गुण-मिलान और मांगलिक-विचार); दूसरी, विवाह-तिथि का मुहूर्त; तीसरी, लग्न-काल का सूक्ष्म निर्णय। तीनों के तर्क और प्रमाण अलग हैं। इस पत्र की चर्चा मुख्यतः दूसरी और तीसरी पर केंद्रित है, क्योंकि कुंडली-मिलान का पश्चिम व्यक्तिगत जन्म-चार्ट के दावों से जुड़ा है, जिनके विषय में परीक्षण-साहित्य खंड 8 में वर्णित है।

5.3 विधिक स्थिति

भारतीय विधि के अंतर्गत हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 7 के अनुसार विवाह किसी भी पक्ष की प्रथागत रीतियों और अनुष्ठानों के अनुसार संपन्न हो सकता है [21]। अधिनियम न तो किसी नक्षत्र या लग्न को अनिवार्य करता है, न किसी मुहूर्त का उल्लंघन विवाह को अवैध ठहराता है। न्यायालयों ने आवश्यक अनुष्ठानों (जैसे जहाँ प्रथा में सप्तपदी आवश्यक हो) की महत्ता पर बल दिया है, पर "अशुभ काल" को वैधता की शर्त नहीं माना [22]। इसका व्यावहारिक निहितार्थ यह है कि मुहूर्त का दबाव विधिक नहीं, सामाजिक है।

5.4 तुलनात्मक सारणी

तालिका 1: विवाह एवं गृहप्रवेश-मुहूर्त के सामान्य नियमों की तुलनात्मक सारणी (ग्रंथ, पंचांग और क्षेत्र के अनुसार भिन्नता संभव; स्रोत: [14,15,17,19] के आधार पर लेखक का संकलन)

घटक	विवाह (सामान्य प्रचलित नियम)	गृहप्रवेश (सामान्य प्रचलित नियम)	मतभेद/टिप्पणी
अयन/मास	उत्तरायण प्राथमिक; माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष प्रचलित	उत्तरायण प्राथमिक; माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ प्रचलित	मास-सूची ग्रंथ और क्षेत्र-भेद से बदलती है
वर्ज्य काल	चातुर्मास, अधिकमास, गुरु-शुक्रास्त	चातुर्मास, अधिकमास, गुरु-शुक्रास्त	क्षेत्रीय रूप (उदा. सिंहस्थ गुरु) अलग
तिथि	रिक्ता (4, 9, 14), अमावस्या, प्रायः अष्टमी वर्ज्य	प्रायः 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 और पूर्णिमा श्रेष्ठ	टीकाओं में सूची-भेद
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र श्रेष्ठ	रवि और मंगल प्रायः वर्ज्य	शनिवार पर मतभेद
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, रेवती	ध्रुव (रोहिणी, तीनों उत्तरा) और मृदु (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) वर्ग	सूची की संख्या ग्रंथ-अनुसार भिन्न
लग्न	शुद्ध लग्न; सप्तम-शुद्धि; गोधूलि वैकल्पिक	स्थिर लग्न को प्राथमिकता	लग्न-गणना हेतु अयनांश-भेद प्रभावी
विशेष वर्गीकरण	विवाह-प्रकार की शास्त्रीय श्रेणियाँ	अपूर्व, सपूर्व और द्वंद्व गृहप्रवेश की श्रेणियाँ	श्रेणी-अनुसार विधि और काल भिन्न
अपवाद	अबूझ मुहूर्त, गोधूलि	आपद-काल में संक्षिप्त विधि	परंपरा में अपवाद-प्रावधान

6. गृहप्रवेश-मुहूर्त के नियम

6.1 गृहप्रवेश के प्रकार

मुहूर्त-ग्रंथों में गृहप्रवेश की तीन श्रेणियाँ मिलती हैं। **अपूर्व** नवनिर्मित गृह में प्रथम प्रवेश है। **सपूर्व** वह प्रवेश है जिसमें गृह पहले से स्वामी का रहा हो, पर वह कुछ काल के लिए अन्यत्र रहकर लौटे। **द्वंद्व** वह है जो आपदा, जीर्णोद्धार या किसी प्रतिबंध के बाद प्रवेश के रूप में हो। श्रेणी के अनुसार शुद्धि-अपेक्षा भिन्न है, और नवनिर्मित गृह के लिए सबसे विस्तृत नियम बताए गए हैं [17]।

6.2 सामान्य नियम

उत्तरायण और शुक्लपक्ष की प्राथमिकता यहाँ भी विद्यमान है। मास के रूप में माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ को विशेष रूप से ग्राह्य माना जाता है [17]। चातुर्मास का निषेध लोक-व्यवहार में अत्यंत दृढ़ है, क्योंकि उसे देवताओं की शयन-अवधि माना जाता है। नक्षत्रों में रोहिणी, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा जैसे स्थिर या मृदु स्वभाव वाले नक्षत्र श्रेष्ठ माने जाते हैं। लग्न में स्थिर राशियाँ (वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) को वरीयता दी जाती है, जिसके पीछे प्रतीकात्मक तर्क यह है कि "स्थिर" लग्न में आरंभ किया गया कार्य स्थायित्व पाता है।

6.3 वास्तु और संस्कार का संबंध

गृहप्रवेश का मुहूर्त वास्तु-विचार से जुड़ा है। बृहत्संहिता में वास्तु-विद्या के सिद्धांतों और गृह-संरचना के नियमों का वर्णन है [14]। व्यवहार में गृहप्रवेश-पूजा के साथ वास्तु-पूजा, कलश-स्थापना और गणेश-पूजन होता है। समकालीन लोक-हिन्दू धर्म के नृवंशविज्ञानी अध्ययन दिखाते हैं कि ऐसे अनुष्ठान घर को "पवित्र स्थान" के रूप में स्थापित करने की सांस्कृतिक क्रिया हैं [7]। इस दृष्टि से मुहूर्त का सामाजिक कार्य दोहरा है: यह परिवार को सामूहिक रूप से एकत्र होने का कारण देता है और नए आवास को सामाजिक मान्यता प्रदान करता है।

6.4 विवाह और गृहप्रवेश-मुहूर्त का तुलनात्मक निरीक्षण

तालिका 1 से तीन तुलनात्मक निष्कर्ष निकलते हैं। पहला, दोनों में काल-वर्जनाएँ (चातुर्मास, अधिकमास, गुरु-शुक्रास्त) साझा हैं, जिससे दोनों की उपलब्ध तिथियाँ वर्ष के लगभग समान भागों में सीमित हो जाती हैं। दूसरा, नक्षत्र-सूचियाँ आंशिक रूप से अतिव्यापी हैं पर भिन्न हैं, जो इस बात का संकेत है कि नक्षत्रों की "शुभता" निरपेक्ष गुण नहीं, कर्म-विशेष-सापेक्ष मान्यता है। तीसरा, गृहप्रवेश में स्थिर लग्न का आग्रह एक प्रतीकात्मक (symbolic) तर्क पर आधारित है, न कि किसी मापन-योग्य कारणत्व पर।

7. पंचांग-गणना की आंतरिक विविधता

7.1 अयनांश और गणना-पद्धति

मुहूर्त के सारे नियम पंचांग पर आश्रित हैं, और पंचांग स्वयं एकरूप नहीं है। भारतीय पंचांगों में गणना की दो प्रमुख धाराएँ हैं: सूर्यसिद्धांत आदि पर आधारित परंपरागत (वाक्य) पद्धति और आधुनिक खगोलीय सारणियों पर आधारित दृक् पद्धति। साथ ही नक्षत्रों की राशि-स्थिति तय करने वाले अयनांश (precession के संशोधन) के मान भी भिन्न-भिन्न अपनाए जाते हैं [20]।

भारत में पंचांग-सुधार का सबसे सुव्यवस्थित प्रयास वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की पंचांग-सुधार समिति (1955) की रिपोर्ट है, जिसने पारंपरिक गणनाओं में विसंगतियों की पहचान की और एकरूप राष्ट्रीय पंचांग की संस्तुति की [23]। समिति की चिंता ही बताती है कि पंचांगों के बीच अंतर वास्तविक और उल्लेखनीय था।

7.2 अंतर का परिणाम

एक सरल सैद्धांतिक आकलन लें। चंद्रमा औसतन दिन में लगभग 13° चलता है। इसलिए अयनांश के मान में लगभग 1° का अंतर चंद्र-आधारित तत्त्वों (नक्षत्र और तिथि की सीमा) में लगभग दो घंटे का विस्थापन उत्पन्न कर देता है (लगभग 1/13 दिन)। यह लेखकीय सरल गणना है, किसी स्रोत का उद्धृत आँकड़ा नहीं। अतः जो मुहूर्त एक पंचांग में "शुभ नक्षत्र" में आता है, वह दूसरे पंचांग

में नक्षत्र-संधि के पास या बाहर पड़ सकता है। नक्षत्र-सीमा पर पड़ने वाले मुहूर्तों में यह असर अधिक होगा। यहाँ "अशुद्धि" परंपरा की नहीं, बल्कि सटीकता की मर्यादा की समस्या है।

7.3 वैज्ञानिक संवाद

भारतीय खगोलविद् नालीकर जैसे वैज्ञानिकों ने भारतीय खगोल-परंपरा की ऐतिहासिक उपलब्धियों का सम्मान करते हुए भी गणित-खगोल और फलित को अलग-अलग मूल्यांकन के योग्य बताया है [24]। यह भेद इस पत्र के लिए आधारभूत है: पंचांग की गणितीय सटीकता एक खगोलीय प्रश्न है, जबकि उसमें प्रयुक्त शुभाशुभ-निर्णय का कारणात्मक प्रभाव एक अनुभवजन्य प्रश्न। पहला परीक्षण-योग्य गणित है, दूसरा परीक्षण-अधीन परिकल्पना।

8. संबंधित शोध-समीक्षा: परिणाम और निष्कर्ष

8.1 अनुभवजन्य परीक्षण: ज्योतिषीय दावे

ज्योतिष के कारणात्मक या भविष्यसूचक दावों के परीक्षण का सर्वाधिक उद्धृत अध्ययन कार्लसन का दोहरा-अंध प्रयोग है। इसमें ज्योतिषियों को जन्म-कुंडलियाँ और व्यक्तित्व-प्रोफाइल मिलाने थे। मूल्यांकन के अनुसार उनकी सफलता संयोग-स्तर (लगभग एक-तिहाई) के आसपास रही और ज्योतिषियों के अपने अपेक्षित स्तर से कम थी [8]।

वायमन और वाइज़ (2008) ने कंप्यूटर-जनित जन्म-चार्ट के आधार पर व्यक्तित्व-मापन की वैधता का दोहरा-अंध परीक्षण किया और ज्योतिषीय चार्ट तथा मानक व्यक्तित्व-सूची के बीच अपेक्षित संगति नहीं पाई [26]। केली (1997) ने ज्योतिष पर उपलब्ध अनुभवजन्य अध्ययनों की व्यापक समीक्षा करते हुए निष्कर्ष निकाला कि ज्योतिषीय कारकों के पक्ष में सुसंगत समर्थन नहीं मिलता, और पद्धतिगत रूप से बेहतर अध्ययनों में नकारात्मक परिणाम अधिक मिलते हैं [25]। हार्टमान, रॉयटर और नाइबोर्ग (2006) ने एक बड़े समूह में जन्मतिथि और व्यक्तित्व तथा सामान्य बुद्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया और कोई सार्थक संबंध नहीं पाया [27]। अध्ययन का नमूना लगभग पंद्रह हजार था, जो इसे सांख्यिकीय रूप से शक्ति बनाता है।

8.2 दर्शन-विज्ञान की दृष्टि

थैगार्ड (1978) ने ज्योतिष को "छद्म-विज्ञान" ठहराने का दर्शन-वैज्ञानिक तर्क दिया। उनका तर्क यह था कि ज्योतिष में सिद्धांत-परिवर्तन की क्षमता न्यून रही, तथा असफलताओं की व्याख्या प्रायः सैद्धांतिक आधार संशोधित करके नहीं, बल्कि बाद की व्याख्या जोड़कर की जाती रही, और वैकल्पिक परिकल्पनाओं से तुलना नहीं हुई [28]। दीन और केली (2003) ने "क्या ज्योतिष चेतना और परा-मनोविज्ञान से प्रासंगिक है" प्रश्न पर विभिन्न परीक्षणों का विवेचन किया और परीक्षित मामलों में समर्थन की कमी को रेखांकित किया [29]।

8.3 विश्वास की मनोविज्ञान

इन दावों के बावजूद ज्योतिष में लोगों का विश्वास टिके रहने के कारणों की मनोवैज्ञानिक व्याख्याएँ उपलब्ध हैं। फोरर (1949) के प्रसिद्ध प्रयोग में विद्यार्थियों को एक ही सामान्य व्यक्तित्व-वर्णन दिया गया, जबकि उन्हें लगा कि वह उनके लिए बना है। उन्होंने उसकी सटीकता का औसत मूल्यांकन लगभग 4.3 (0 से 5 के पैमाने पर) किया [31]। इसे "व्यक्तिगत-वैधीकरण" का भ्रम (Forer/Barnum प्रभाव) कहा गया। निकर्सन (1998) की समीक्षा बताती है कि पुष्टिकरण-पक्षपात (confirmation bias) मनुष्य की सर्वव्यापी प्रवृत्ति है, जिसमें अपने विश्वास से मेल खाते प्रमाण याद रखे जाते हैं और विरोधी प्रमाण भुला दिए जाते हैं [32]।

वाइज़ (1997) ने अंधविश्वास के मनोविज्ञान पर लिखते हुए अनिश्चितता और नियंत्रण की आवश्यकता को ऐसे विश्वासों का महत्वपूर्ण कारण बताया [30]।

मुहूर्त पर यह तर्क और भी सटीक बैठता है। यदि विवाह के बाद कोई समस्या आती है, तो "मुहूर्त में दोष" की व्याख्या खोजी जा सकती है। यदि विवाह सुखी चलता है, तो उसका श्रेय "शुभ मुहूर्त" को दिया जाता है। इस प्रकार किसी भी परिणाम से मुहूर्त का समर्थन निकल सकता है, और यही अपरीक्षणीयता का संकेत है। यह निष्कर्ष लेखकीय विश्लेषण है, किसी अध्ययन का सीधा परिणाम नहीं।

8.4 अनुसंधान-परिणामों की सारणी

तालिका 2: चयनित पूर्व शोध-समीक्षाओं के परिणाम एवं इस अध्ययन के लिए निहितार्थ

स्रोत	अभिकल्प	मुख्य परिणाम/निष्कर्ष	प्रस्तुत विषय हेतु निहितार्थ
कार्लसन (1985) [8]	दोहरा-अंध; चार्ट-व्यक्तित्व मिलान	सफलता संयोग-स्तर (लगभग एक-तिहाई) के आसपास	ज्योतिषीय पूर्वकथन का आधार कमजोर
केली (1997) [25]	अनुभवजन्य अध्ययनों की समीक्षा	कारकों के पक्ष में सुसंगत समर्थन नहीं	समग्र साक्ष्य-आधार अपर्याप्त
वायमन एवं वाइज़ (2008) [26]	दोहरा-अंध; कंप्यूटर-चार्ट बनाम व्यक्तित्व-सूची	अपेक्षित संगति अनुपस्थित	व्याख्या-आधारित दावे अस्थिर
हार्टमान एवं अन्य (2006) [27]	बड़ा नमूना (लगभग 15,000); जन्मतिथि बनाम व्यक्तित्व/बुद्धि	सार्वभौम संबंध नहीं	काल-आधारित निर्धारणवाद पर प्रश्न
फोरर (1949) [31]	विद्यार्थियों द्वारा सामान्य विवरण का मूल्यांकन	औसत सटीकता-अंक लगभग 4.3/5	व्यक्तिपरक संतुष्टि वस्तुनिष्ठ सटीकता नहीं
निकर्सन (1998) [32]	साहित्य-समीक्षा	पुष्टिकरण-पक्षपात सर्वव्यापी	मुहूर्त-परिणामों की चयनात्मक व्याख्या
ब्रूक्स एवं अन्य (2016) [34]	प्रायोगिक अध्ययन	अनुष्ठान चिंता घटाते हैं और प्रदर्शन सुधारते हैं	मुहूर्त-अनुष्ठान का संभावित वास्तविक लाभ
नॉर्टन एवं जीनो (2014) [35]	प्रायोगिक अध्ययन	अनुष्ठान शोक और हानि के भाव को कम करते हैं	अनुष्ठान का भावनात्मक कार्य

8.5 साक्ष्य का समग्र आकलन

तालिका 2 से दो स्तर स्पष्ट होते हैं। पहले स्तर पर कारणात्मक दावे हैं, जहाँ उपलब्ध परीक्षण ज्योतिषीय कारकों के समर्थन में नहीं हैं [8,25–27]। दूसरे स्तर पर अनुष्ठान के मनोवैज्ञानिक कार्य हैं, जहाँ प्रायोगिक साक्ष्य सकारात्मक है [34,35]। यह भेद इस पत्र की मूल विश्लेषणात्मक धुरी है। मुहूर्त का "प्रभाव" यदि है, तो वह तारों के प्रभाव के कारण नहीं, बल्कि उस अनुष्ठानिक प्रक्रिया के कारण है जिसमें परिवार एक-साथ तैयारी करता है, अनिश्चितता घटती है और सामूहिक सहमति बनती है।

एक आवश्यक सावधानी भी रखनी होगी। ये अनुभवजन्य अध्ययन जन्म-कुंडली और ज्योतिषीय व्यक्तित्व-मूल्यांकन पर हैं, विवाह या गृहप्रवेश के चयन-मुहूर्त पर नहीं। इसलिए इनका प्रयोग मुहूर्त पर निर्णायक प्रमाण के रूप में नहीं, बल्कि निकट-संबद्ध साक्ष्य के रूप में किया जा रहा है। मुहूर्त-विशिष्ट प्रत्यक्ष अनुभवजन्य अध्ययनों का अभाव स्वयं एक शोध-अंतराल है, जिसकी ओर खंड 11 में प्रस्ताव दिए गए हैं।

9. बहु-दृष्टिकोण विश्लेषण

9.1 शास्त्रीय-आंतरिक दृष्टिकोण

शास्त्र की अपनी भाषा में मुहूर्त सुविधा और शुद्धि की एक संहिता है, और परंपरा के भीतर भी इस पर सतर्कता के स्वर मिलते हैं। नियमों की विविधता (तालिका 1), अपवादों की प्रचुरता (गोधूली, अबूझ मुहूर्त) और आरंभिक गृहसूत्र की सादगी [15] मिलकर यह संकेत देती हैं कि मुहूर्त-नियम बहुत सीमा तक कालांतर में विकसित, अनुकूलनशील संरचना हैं। इस दृष्टि से कठोर और सर्वग्राही नियमों का आग्रह शास्त्र की अपनी मूल प्रकृति से भी मेल नहीं खाता।

9.2 वैज्ञानिक-अनुभवजन्य दृष्टिकोण

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मुहूर्त का सर्वाधिक मूलभूत प्रश्न कारणत्व-तंत्र का है: विवाह के क्षण में चंद्रमा किस नक्षत्र में है, इसका दांपत्य-जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव किस भौतिक या जैविक प्रक्रिया से होगा? ऐसा कोई प्रस्तावित और परीक्षित तंत्र उपलब्ध नहीं है। परीक्षित ज्योतिषीय दावों के परिणाम [8,25–27], दर्शन-वैज्ञानिक आलोचना [28] और पंचांग-गणना में गणितीय विविधता [23] सब मिलकर इस दृष्टिकोण को बल देते हैं। इसके साथ ही यह भी कहना आवश्यक है कि "प्रमाण का अभाव" और "असत्यता का प्रमाण" में अंतर है। मुहूर्त-विशिष्ट कठोर परीक्षण कम हुए हैं, इसलिए अंतिम निर्णय की भाषा सावधान रहनी चाहिए।

9.3 मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

अनुष्ठान-मनोविज्ञान की समीक्षा के अनुसार अनुष्ठान एक संरचित, प्रतीकात्मक और अक्सर पुनरावृत्त व्यवहार हैं, जिनके भावनात्मक और व्यवहारात्मक प्रभाव मापे जा सकते हैं [33]। प्रयोगों में पाया गया है कि अनुष्ठान चिंता घटाकर प्रदर्शन में सुधार ला सकते हैं [34] और शोक एवं हानि-बोध को कम कर सकते हैं [35]। विवाह जैसे उच्च-दाँव, उच्च-अनिश्चितता वाले अवसर पर शुभ क्षण का निश्चय परिवार को यह भावना दे सकता है कि सब कुछ "यथोचित" किया गया, और यह नियंत्रण-बोध चिंता घटा सकता है। यहाँ यह आवश्यक नहीं कि मुहूर्त "सही" हो, बल्कि यह कि उसमें विश्वास साझा हो।

इसका दूसरा पक्ष भी है। यदि कोई अनुष्ठान-विश्वास भय-आधारित हो जाए, जैसे "अशुभ मुहूर्त से अनिष्ट होगा", तो वह चिंता को घटाने की जगह बढ़ा भी सकता है। यह अध्ययन में प्रस्तावित परिकल्पना है, किसी उद्धृत अध्ययन का निष्कर्ष नहीं, और इसे परखने की आवश्यकता है।

9.4 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

समाजशास्त्र में भारतीय संस्कारों को सांस्कृतिक संचरण और सामाजिक-एकीकरण की व्यवस्थाओं के रूप में देखा गया है [2–4]। श्रीनिवास की "संस्कृतीकरण" की अवधारणा के अनुसार निम्न समूह प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए उच्च वर्गों के अनुष्ठान और रीतियाँ अपनाते हैं [36]। इस दृष्टि से पंचांग-आधारित मुहूर्त का व्यापक प्रसार केवल धार्मिक नहीं, प्रतिष्ठा-अर्जन और सामाजिक-सहमति से भी जुड़ा हो सकता है, क्योंकि "विधि से किया गया विवाह" सामाजिक वैधता का प्रतीक बनता है।

विवाह-आयु और लैंगिक भूमिकाओं पर समाजशास्त्रीय शोध दिखाता है कि भारत में विवाह-निर्णय लैंगिक-आदर्शों और पारिवारिक नियंत्रण से गहराई से प्रभावित रहता है [37]। ऐसे ढाँचे में मुहूर्त का निर्णय प्रायः बड़ों द्वारा लिया जाता है, और वर-वधू की व्यक्तिगत सुविधा गौण हो सकती है। यह केवल एक संभावित निहितार्थ है, जिसकी परीक्षा मुहूर्त-विशिष्ट सर्वेक्षणों से होनी चाहिए।

9.5 विधिक दृष्टिकोण

जैसा खंड 5.3 में स्पष्ट है, हिन्दू विवाह अधिनियम किसी मुहूर्त की अपेक्षा नहीं रखता [21], और न्यायिक दृष्टि अनुष्ठान की अनिवार्यता को प्रथा के अनुसार देखती है, ज्योतिषीय शुभता के अनुसार नहीं [22]। अतः कोई विवाह "अशुभ" काल में हुआ हो तो भी विधिक रूप से वैध है। इसका सामाजिक निहितार्थ है कि मुहूर्त-पालन पूर्णतः स्वैच्छिक सांस्कृतिक चयन है, और किसी पर थोपा नहीं जा सकता।

9.6 आर्थिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण

जब स्वीकार्य तिथियाँ वर्ष के कुछ ही दिनों तक सिमट जाती हैं, तो माँग-संकुलन पैदा होता है। संभावित परिणाम हैं: सभागृहों और सेवा-प्रदाताओं की कीमतों में वृद्धि, तिथि-चयन पर अनावश्यक प्रतिस्पर्धा और पुरोहित-ज्योतिषियों पर निर्भरता। इस प्रभाव का परिमाण इस पत्र में मापा नहीं गया है। इसके लिए प्राथमिक आँकड़ों (सेवा-शुल्क-श्रृंखला, बुकिंग-डेटा) की आवश्यकता होगी। इसलिए इसे शोध-प्रस्ताव के रूप में रखा गया है, सिद्ध तथ्य के रूप में नहीं।

10. लेखकीय संयोजन-मॉडल: "कितने दिन शेष बचते हैं?"

यह खंड एक सरल गणितीय अभ्यास है, कोई अनुभवजन्य प्रेक्षण नहीं। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि यदि सामान्य नियम एक साथ लागू किए जाएँ तो स्वीकार्य दिनों का अनुपात कितना घट जाता है।

10.1 मान्यताएँ (तालिका 1 की सामान्य सूचियों पर आधारित)

विवाह के लिए: नक्षत्र: 27 में से लगभग 11 शुभ, अर्थात् 0.407। तिथि: 30 में से लगभग 21 स्वीकार्य (रिक्ता, अमावस्या और अष्टमी हटाकर), अर्थात् 0.70। वार: 7 में से 4 श्रेष्ठ, अर्थात् 0.571। मास: वर्ष के लगभग 5 मास स्वीकार्य, जिनमें से गुरु-शुक्रास्त आदि के कारण लगभग 85% काल उपलब्ध, अर्थात् $(5/12) \times 0.85 \approx 0.354$ । इन कारकों को लगभग स्वतंत्र मान लिया गया है, जो एक सरलीकरण है।

10.2 गणना

विवाह के लिए सम्मिलित अनुपात: $0.407 \times 0.70 \times 0.571 \times 0.354 \approx 0.058$ । यह वर्ष के लगभग 5.8% दिनों के बराबर है, अर्थात् लगभग $365 \times 0.058 \approx 21$ दिन। लग्न-शुद्धि के बाद प्रतिदिन का स्वीकार्य काल और भी संकरा होगा।

गृहप्रवेश के लिए मान्यताएँ: नक्षत्र लगभग $9/27 = 0.333$; तिथि लगभग $15/30 = 0.50$; वार $5/7 = 0.714$; मास $4/12 = 0.333$ । सम्मिलित अनुपात: $0.333 \times 0.50 \times 0.714 \times 0.333 \approx 0.040$, अर्थात् वर्ष में लगभग 14–15 दिन।

10.3 व्याख्या एवं सीमाएँ

इन संख्याओं के तीन निहितार्थ हैं। पहला, लगभग 15-25 दिनों में पूरे देश के लाखों विवाह और गृहप्रवेश संकुलित होने का संभावित दबाव बनता है। दूसरा, यदि नियम-सूचियाँ बदलें (उदाहरण के लिए 10 या 12 नक्षत्र) तो परिणाम में लगभग दस प्रतिशत का परिवर्तन आ जाता है, अर्थात् मॉडल का निष्कर्ष विशिष्ट संख्याओं पर नहीं, अनुपात की कोटि पर टिका है। तीसरा, इस गणना से मुहूर्त की "सत्यता" या "असत्यता" सिद्ध नहीं होती, यह केवल उसकी व्यावहारिक कठोरता को मापती है।

मॉडल की सीमाएँ भी स्पष्ट हैं: कारकों की स्वतंत्रता की मान्यता अनुमानित है, नियम-सूचियाँ ग्रंथ और क्षेत्र के अनुसार बदलती हैं, पंचांग-भेद (खंड 7) ऐसे अनुपात बदल सकते हैं, और वास्तविक पंचांगों में दिखाए गए विवाह-मुहूर्तों की संख्या से इसका मिलान इस अध्ययन में नहीं किया गया। इन आँकड़ों का उपयोग केवल उदाहरणात्मक रूप में हो, और उन्हें किसी बाह्य स्रोत की माप के रूप में न उद्धृत किया जाए।

11. विमर्श: "यथार्थ" के सम्मुख मुहूर्त

11.1 मुख्य निष्कर्षों का संश्लेषण

चारों परिकल्पनाओं का आकलन इस प्रकार है। H1 (नियमों की भिन्नता) की पुष्टि होती है: तालिका 1 में सूचियों का अंतर, पंचांग-गणना की विविधता [23] और अपवाद-व्यवस्था सब इसका समर्थन करते हैं। H2 (कारणात्मक प्रमाण का अभाव) के संबंध में उपलब्ध निकट-संबद्ध परीक्षण परिकल्पना का समर्थन नहीं करते [8,25-27], हालाँकि मुहूर्त-विशिष्ट परीक्षणों का अभाव निष्कर्ष को सावधानीपूर्वक रखने को बाध्य करता है। H3 (अनुष्ठान-जनित मनोवैज्ञानिक कार्य) को अनुष्ठान-अध्ययनों का अप्रत्यक्ष समर्थन है [33-35], परंतु मुहूर्त पर प्रत्यक्ष परीक्षण नहीं हुए। H4 (समय-संकुलन) का समर्थन गणितीय मॉडल करता है, पर वास्तविक आँकड़ों से सत्यापन शेष है।

11.2 तीन संभावित "आदर्श स्थितियाँ"

विमर्श से तीन व्यावहारिक रुख निकलते हैं। **पहला रुख:** "निर्धारणवादी" दृष्टि, जिसमें मुहूर्त को अवश्यंभावी परिणाम-निर्धारक माना जाता है। साक्ष्य इसका समर्थन नहीं करते। **दूसरा रुख:** "प्रतीकात्मक-अनुष्ठानिक" दृष्टि, जिसमें मुहूर्त को सांस्कृतिक समय-चिह्न और चिंता-शमन की प्रक्रिया माना जाता है। यह साक्ष्य-संगत है और परंपरा का सम्मान भी करता है। **तीसरा रुख:** "पूर्ण-अस्वीकार" की दृष्टि, जो मुहूर्त के सामाजिक मूल्य को अनदेखा करती है। यह भी अपूर्ण है, क्योंकि अनुष्ठान के वास्तविक भावनात्मक और सामाजिक कार्य अनुभवजन्य रूप से दिखाई देते हैं [33-35]। इन रुखों में दूसरा रुख इस अध्ययन के साक्ष्य से सर्वाधिक संगत है।

11.3 परंपरा और विवेक

परंपरा के भीतर भी लचीलेपन की धारा है, जिसका एक सूचक गोधूलि और अबूझ मुहूर्त जैसे अपवाद हैं। इसलिए जो व्यक्ति मुहूर्त को वैज्ञानिक सिद्धांत की तरह नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक समय-परंपरा की तरह ग्रहण करता है, वह परंपरा के अनुरूप भी चलता है और साक्ष्य के भी। जो दोष-भय से निर्णय करता है, वह परंपरा की उदारता से भी दूर है और साक्ष्य से भी।

11.4 भावी शोध हेतु परीक्षणीय प्रस्ताव

मुहूर्त-विशिष्ट अनुभवजन्य अंतराल को भरने के लिए निम्नलिखित अभिकल्प प्रस्तावित हैं, जो लेखकीय सुझाव हैं।

- **पूर्वव्यापी तुलनात्मक अध्ययन:** पंचांग-शुद्ध मुहूर्त में विवाहित और अन्य विवाहित जोड़ों की तुलना, सत्यापित वैवाहिक-संतुष्टि मापदंडों पर। भ्रामक कारकों (आयु, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, समुदाय) का नियंत्रण अनिवार्य है।
- **पंचांग-विविधता का मात्रात्मक अध्ययन:** एक ही स्थान के लिए विभिन्न पंचांगों के विवाह-मुहूर्तों का मिलान और असंगति का अनुपात।
- **चिंता-माप अध्ययन:** मुहूर्त-निश्चय से पूर्व और पश्चात् परिवार-सदस्यों की चिंता का सर्वेक्षण-आधारित मापन, ताकि अनुष्ठान-जनित प्रभाव की परीक्षा हो।
- **आर्थिक अध्ययन:** वैवाहिक-सत्र की तिथियों पर सेवा-मूल्य और बुकिंग-डेटा का विश्लेषण।
- **सुविचारित सहभागी-दृष्टि:** वर-वधू की अपनी सहभागिता और निर्णय-स्वतंत्रता पर गुणात्मक अध्ययन।

12. सीमाएँ

यह अध्ययन समीक्षा-स्वरूप का है और कोई मौलिक प्राथमिक डेटा संग्रह नहीं करता। स्रोत-चयन उद्देश्यपूर्ण है और डेटाबेस-आधारित संपूर्ण खोज पर नहीं टिका। संस्कृत मूल-पाठों के उद्धरणों का मिलान मानक आलोचनात्मक संस्करणों से किया जाना चाहिए। मुहूर्त-विशिष्ट अनुभवजन्य साहित्य की दुर्लभता के कारण अनेक निष्कर्ष निकट-संबद्ध साक्ष्य से अनुमानित हैं। खंड 10 का गणितीय मॉडल सरलीकृत है। अंत में, हिन्दी में प्रकाशित स्थानीय शोध का समावेश सीमित रहा, जो भावी समीक्षाओं में विस्तारित होना चाहिए।

13. निष्कर्ष

इस पत्र का केंद्रीय निष्कर्ष तीन वाक्यों में समाहित है। पहला, मुहूर्त-नियम एक ऐतिहासिक रूप से विकसित, आंतरिक रूप से बहुल और पंचांग-गणना पर आश्रित व्यवस्था है, जिसमें अपवाद और भिन्न मत स्वयं विद्यमान हैं। दूसरा, ज्योतिषीय कारणत्व के पक्ष में उपलब्ध निकट-संबद्ध अनुभवजन्य साक्ष्य समर्थन नहीं देते, और मुहूर्त-विशिष्ट परीक्षण का अभाव एक खुला शोध-प्रश्न है। तीसरा, अनुष्ठान-जनित चिंता-शमन, सामाजिक सहमति और सांस्कृतिक निरंतरता जैसे मुहूर्त के संभावित कार्य वास्तविक हैं और इन्हें साक्ष्य-सम्मत ढंग से स्वीकारा जा सकता है।

इसलिए यह अध्ययन अंध-श्रद्धा और अंध-खंडन के बीच एक तीसरा मार्ग सुझाता है: विवेकपूर्ण सांस्कृतिक व्यवहार। परिवार चाहें तो अपने मूल्यों के अनुसार मुहूर्त का पालन करें, पर उसे परिणाम की गारंटी न मानें, भय-आधारित निर्णय न लें, और वर-वधू की सुविधा तथा सहमति को प्राथमिकता दें। नीतिगत स्तर पर पंचांग-एकरूपता, पारदर्शी गणना और ज्योतिषीय सेवाओं में उपभोक्ता-जागरूकता की दिशा में कार्य उपयोगी होगा। शैक्षणिक स्तर पर संस्कृत-ज्योतिष के गणितीय अंश और फलित अंश का पृथक् और ईमानदार अध्ययन-अध्यापन आवश्यक है। परंपरा का सम्मान उसके सतर्क अध्ययन से ही सच्चे अर्थ में संभव है।

संदर्भ-सूची

1. Pandey RB. Hindu Saṁskāras: socio-religious study of the Hindu sacraments. 2nd ed. Delhi: Motilal Banarsidass; 1969.
2. Ahluwalia PS. संस्कार और संस्कृति: समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन [Saṁskāra and culture: a study from the sociological perspective]. शब्दसागर. 2023;17-25.
3. Ahluwalia PS. भाषा, संस्कार और संस्कृति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण [Sociological analysis of language, saṁskāra and culture]. शब्दसागर. 2023;35-41.

4. Ahluwalia PS. भाषा और संस्कृति के विकास में संस्कारों का महत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन [The importance of saṃskāras in the development of language and culture: a sociological study]. शब्दसागर. 2024;1-8.
5. Kane PV. History of Dharmaśāstra. Vol. 2, Part 1. Poona: Bhandarkar Oriental Research Institute; 1941.
6. Pingree D. Jyotiḥśāstra: astral and mathematical literature. Wiesbaden: Otto Harrassowitz; 1981. (A History of Indian Literature; vol. 6, fasc. 4).
7. Fuller CJ. The camphor flame: popular Hinduism and society in India. Princeton: Princeton University Press; 1992.
8. Carlson S. A double-blind test of astrology. Nature. 1985;318(6045):419-25.
9. Page MJ, McKenzie JE, Bossuyt PM, Boutron I, Hoffmann TC, Mulrow CD, et al. The PRISMA 2020 statement: an updated guideline for reporting systematic reviews. BMJ. 2021;372:n71.
10. Tricco AC, Lillie E, Zarin W, O'Brien KK, Colquhoun H, Levac D, et al. PRISMA extension for scoping reviews (PRISMA-ScR): checklist and explanation. Ann Intern Med. 2018;169(7):467-73.
11. Ahluwalia PS. Plagiarism: detection techniques and tools. Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities. 2024;1-11.
12. Ahluwalia PS. Ethical issues in social science research. Shodh Patra: International Journal of Multidisciplinary Studies. 2024;1-8.
13. Kuppanna Sastry TS. Vedāṅga Jyotiṣa of Lagadha. New Delhi: Indian National Science Academy; 1985.
14. Varāhamihira. Br̥hat Saṃhitā. Bhat MR, translator. Delhi: Motilal Banarsidass; 1981.
15. Oldenberg H, translator. The Grihya-sūtras: rules of Vedic domestic ceremonies. Part 1. Oxford: Clarendon Press; 1886. (Sacred Books of the East; vol. 29).
16. Olivelle P, translator. The law code of Manu. Oxford: Oxford University Press; 2004.
17. Daivajña Rāma. Muhūrtacintāmaṇi, with the Pīyūṣadhārā commentary of Govinda. Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Sansthan; reprint edition.
18. Pingree D. From astral omens to astrology: from Babylon to Bīkāner. Rome: Istituto Italiano per l'Africa e l'Oriente; 1997.
19. Kane PV. History of Dharmaśāstra. Vol. 5, Part 1. Poona: Bhandarkar Oriental Research Institute; 1958.
20. Sewell R, Dikshit SB. The Indian calendar. London: Swan Sonnenschein; 1896.
21. Hindu Marriage Act, 1955 (Act No. 25 of 1955). India.
22. Bhaurao Shankar Lokhande v. State of Maharashtra. AIR 1965 SC 1564 (India).
23. Council of Scientific and Industrial Research. Report of the Calendar Reform Committee. New Delhi: CSIR; 1955.
24. Narlikar JV. The scientific edge: the Indian scientist from Vedic to modern times. New Delhi: Penguin Books India; 2003.
25. Kelly IW. Modern astrology: a critique. Psychol Rep. 1997;81(2):1035-66.
26. Wyman AJ, Vyse S. Science versus the stars: a double-blind test of the validity of the NEO Five-Factor Inventory and computer-generated astrological natal charts. J Gen Psychol. 2008;135(3):247-64.
27. Hartmann P, Reuter M, Nyborg H. The relationship between date of birth and individual differences in personality and general intelligence: a large-scale study. Pers Individ Dif. 2006;40(7):1349-62.

28. Thagard PR. Why astrology is a pseudoscience. PSA: Proceedings of the Biennial Meeting of the Philosophy of Science Association. 1978;1978(1):223-34.
29. Dean G, Kelly IW. Is astrology relevant to consciousness and psi? J Conscious Stud. 2003;10(6-7):175-98.
30. Vyse SA. Believing in magic: the psychology of superstition. New York: Oxford University Press; 1997.
31. Forer BR. The fallacy of personal validation: a classroom demonstration of gullibility. J Abnorm Soc Psychol. 1949;44(1):118-23.
32. Nickerson RS. Confirmation bias: a ubiquitous phenomenon in many guises. Rev Gen Psychol. 1998;2(2):175-220.
33. Hobson NM, Schroeder J, Risen JL, Xygalatas D, Inzlicht M. The psychology of rituals: an integrative review and process-based framework. Pers Soc Psychol Rev. 2018;22(3):260-84.
34. Brooks AW, Schroeder J, Risen JL, Gino F, Galinsky AD, Norton MI, et al. Don't stop believing: rituals improve performance by decreasing anxiety. Organ Behav Hum Decis Process. 2016;137:71-85.
35. Norton MI, Gino F. Rituals alleviate grieving for loved ones, lovers, and lotteries. J Exp Psychol Gen. 2014;143(1):266-72.
36. Srinivas MN. Social change in modern India. Berkeley: University of California Press; 1966.
37. Desai S, Andrist L. Gender scripts and age at marriage in India. Demography. 2010;47(3):667-87.